SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

औपनिवेशिक भारत में शिक्षा का विकास और लॉर्ड मैकाले का विवरण पत्र

नंदिता, Ph.D., पर्यवेक्षिका, इतिहास विभाग
राजेन्द्र मेमोरियल महिला कॉलेज, नवादा, बिहार, भारत
जयंती कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नंदिता, Ph.D.
जयंती कुमारी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/08/2023
Revised on : -----
Accepted on : 17/08/2023
Plagiarism : 05% on 10/08/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 5%
Date: Aug 10, 2023
Statistics: 98 words Plagiarized / 1950 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

शोध सार

प्राचीन काल में भारत में गुरुकुल शिक्षा पद्धति प्रचलित थी, जो मुख्य रूप से ब्रह्मचर्य की अवधारणा पर आधारित थी। मध्यकाल में शिक्षा मकतब, खानकाह, मस्जिद, दरगाह आदि में दी जाती थी। भारत में ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित होने के बाद कंपनी ने अपनी औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के तहत तथा अपने राजनीतिक, प्रशासनिक व आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था को लागू करने का निश्चय किया और इसके लिए 1813 ई. का चार्टर एक्ट के द्वारा 1835 में लॉर्ड मैकाले का विवरण पत्र लाया गया। इस नीति के माध्यम से ज्यादातर अंग्रेजों को फायदा हुआ और भारतीय लोगों व शिक्षाविदों को इससे लाभ नहीं के बराबर रहा।[1]

मुख्य शब्द

गुरुकुल, ब्रह्मचर्य, औपनिवेशिक, 1813 ई. का चार्टर एक्ट, 1835 का लॉर्ड मैकाले का विवरण–पत्र.

भूमिका

1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा पहली बार शिक्षा के प्रति राजकीय उत्तरदायित्व को वहन करते हुए, ब्रिटिश सरकार ने भारतीय क्षेत्रों में साहित्य, विज्ञान तथा विद्वानों के प्रोत्साहन के लिए प्रत्येक वर्ष एक लाख रूपया खर्च करने की व्यवस्था की। इसे बढ़ाकर 1833 ई. में 10 लाख रूपये सलाना तक कर दिया गया। इसके साथ ही इस एक्ट ने इंगलैण्ड के व्यापारियों व ईसाई मिशनरियों को संचालन समिति की अनुमति से नियमित रूप से भारत में आने व बसने की छूट प्रदान कर दी।[2]

2 फरवरी 1835 ई. को लॉर्ड मैकाले ने अपना पत्र

जारी कर भारतीय प्राच्यविद्या पर कटाक्ष करते हुए कहा कि, ''1813 ई. के चार्टर एक्ट में एक लाख रू. प्रतिवर्ष लोगों के बौद्धिक स्तर को सुधारने के लिए रखा गया है, लेकिन देशी भाषाओं के माध्यम से लोगों के बौद्धिक स्तर में सुधार नहीं हो सकता।'' ब्रिटिश उपनिवेशवादी लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समर्पित मैकाले ने भारतीय प्राच्य भाषाओं (संस्कृत, अरबी) व भारतीय ज्ञान–विज्ञान एवं संस्कृति का अपने वक्तव्यों के जरिये उपहास उड़ाया। मैकाले की मान्यता थी कि किसी अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की अलमारी का एक खाना, भारत और अरब देशों के सम्पूर्ण साहित्य के बराबर है।[3]

उद्देश्य

लॉर्ड मैकाले तथा उसके समर्थक ऐसी शिक्षा पर पैसा खर्च करना व्यर्थ समझते थे। यद्यपि मैकाले यह जानता था कि, अंग्रेजी भारत में जनसामान्य तक नहीं पहुँच सकती, लेकिन मैकाले का उद्देश्य प्रशासनिक जरूरतों को पूरा करना था, न कि आम जनता तक अंग्रेजी भाषा का प्रसार करना। उसका उद्देश्य भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना था, जो रंग और खून में तो भारतीय हो लेकिन रूचि, विचार, नैतिकता व बुद्धि से अंग्रेज हो। अन्ततः गर्वनर लॉर्ड विलियम बैंटिक ने मैकाले के विचारों का अनुमोदन करते हुए 7 मार्च 1835 ई. को एक प्रस्ताव जारी कर, अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को अपनाया। प्रस्ताव में कहा गया कि, महामहिम गर्वनर जनरल का मत है कि ब्रिटिश सरकार का महान उद्देश्य भारतीयों में यूरोपीय साहित्य और विज्ञान का प्रसार करना होगा तथा शिक्षा के लिए धनराशि का प्रावधान किया गया है, उसका उपयोग अंग्रेजी शिक्षा के लिए ही किया जायेगा।[4] भारत के शैक्षिक इतिहास में लॉर्ड बैंटिक का यह प्रस्ताव एक नये युग के समान था। इस दिशा में आगे कदम बढ़ाते हुए 1835 ई. में बिर्टिश सरकार ने अंग्रेजी को राजकीय भाषा घोषित कर दिया जिससे अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को बढ़ावा मिला। बैंटिक पहला गवर्नर–जनरल था, जिसने यह आज्ञा दे दी और नियम पारित कर दिया कि भविष्य में सारा पत्र व्यवहार फारसी की जगह अंग्रेजी भाषा में होना चाहिए।[5] इस तरह शिक्षा नीति को राजाराम मोहन राय, राधाकांत देव जैसे समाज सुधारकों ने भी अपनी स्वीकृति प्रदान की। इनकी लोकप्रियता का कारण यह भी था कि इन स्कूलों में पढ़े हुए लोगों के लिए सरकारी नौकरी निश्चित समझी जाती थी।

लॉर्ड मैकाले ने अपने विवरण पत्र में मुख्य शर्तें निम्नलिखित थे[6]–

1. 1813 के एकाधिकर–पत्र में साहित्य शब्द केवल संस्कृत तथा साहित्य के लिए प्रयुक्त हुआ था, बल्कि अंग्रेजी साहित्य के लिए भी होना चाहिए।
2. अधिकार–पत्र के ''विद्वान भारतीयों के प्रोत्साहन'' का तात्पर्य केवल पंडितों तथा मौलवियों को प्रोत्साहन देना न था, बल्कि इसका तात्पर्य अग्रेजी साहित्य से परिचित भारतीयों को भी प्रोत्साहित करने से था।
3. विद्वान शब्द से उसका तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से था जिसने लॉक का दर्शन पढ़ा है और जिसे मिल्टन की कविता का ज्ञान है।
4. शिक्षा का माध्यम मैकाले ने अंग्रेजी को ही माना।
5. भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर कुठाराधात करते हुए मैकाले ने कहा, ''अच्छे यूरोपियन साहित्य से भरा अलमारी का एक खाना ही भारत के समूचे मूल साहित्य के बराबर है।''
6. मैकाले ने शिक्षा के द्वारा एक ऐसे वर्ग को तैयार करना चाहा था, जो भारतीय होने के बाद भी अंग्रेजों के शर्तों का समर्थक हो। मैकाले 'निस्पन्दन सिद्धांत' का पोषक था।

सन् 1844 में लॉर्ड हार्डिंग ने घोषणा की थी, अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त लोगों की सरकारी नौकरी में प्राथमिकता दी जाएगी। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि शिक्षा का उद्देश्य बिल्कुल सीमित था। विद्यार्थियों को जीवन के लिए नहीं बल्कि मात्र सरकारी नौकरियों के लिए तैयार किया जाता था। अच्छे क्लर्क पैदा करने के लिए सारा बल किताबी पढ़ाई पर लगाया जाता था और शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता था। क्लर्क पैदा करने के अतिरिक्त मैकाले सारे भारतवर्ष को ईसाई धर्म में भी बदल देना चाहता था। उसकी यह इच्छा

उसके एक पत्र से स्पष्ट होती है जो उसने 12 अक्टूबर, 1835 को कलकत्ता से अपने माता–पिता को लिखा था। इस पत्र में उसने संकेत किया–

''हमारे अंग्रेजी स्कूल विचित्र रूप से उन्नति कर रहे है। हिन्दुओं पर इस शिक्षा का प्रभाव आश्चर्यजनक है। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी हिंदू अपने धर्म के साथ गम्भीरता से सम्बन्धित नहीं रहता। कुछ तो नीति के रूप में इस शिक्षा को अपनाते हैं परन्तु कुछ हिन्दू धर्म में अपना विश्वास जमाए रखते हैं और कुछ ईसाई धर्म को अपना लेते हैं।'' स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा–प्रणाली की त्रुटियों का मूल कारण अंग्रेजों की नीति ही थी जिसका अनुसरण लॉर्ड मैकाले तथा लॉर्ड विलियम बैंटिक ने किया था।

भारतीय शिक्षा के इतिहास में मैकाले का स्थान

भारतीय शिक्षा को स्थायी रूप देने वाला मैकाले ही था। मैकाले को भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रतिष्ठापक का श्रेय दिया जाना चाहिए। कुछ आलोचकों का कहना है कि भारत को दासता की जंजीरों में जकड़ने के लिए मैकाले उत्तरदायी हैं और इसके पक्ष में अनेक तर्क दिए जाते हैं:

1. मैकाले विदेशी भाषा के माध्यम से पाश्चात्य सभ्यता को थोपना चाहता था।
2. मैकाले ने भारतीय भाषा का अपमान तथा अनादर किया है।
3. मैकाले ने शिक्षित वर्ग और जन–साधारण के बीच खाई बनाई।
4. मैकाले ने नवीन वर्ग का निर्माण किया, जिसका दृष्टिकोण भारतीय न था।
5. मैकाले ने भारतीय धर्म और संस्कृति का अपमान तथा अनादर किया है।
6. मैकाले ने भारतीय धार्मिक एकता को विनष्ट करने का प्रयास किया।

मैकाले के विवरण–पत्र की समालोचना

मैकाले के विवरण–पत्र के सम्बन्ध में अनेक विद्धानों ने अपने विभिन्न मत व्यक्त किए हैं, जो निम्न प्रकार हैं।

"The result of this action was that in future the teaching in high school and colleges would be in English and this momentous decisions has had it ffeect on educational policy in India right don to the present time."

– F.E. Key

अनेक विद्वान मैकाले के इस कार्य को बहुत ही महत्वपूर्ण मानते हैं और उसे भारतीय शिक्षा का अग्रदूत मानते हैं साथ ही इस मत के भी विद्वान हैं जिनके अनुसार यह कहना कि मैकाले भारतीय शिक्षा का अग्रदूत था, नितान्त अतिशयोक्ति पूर्ण है।

"To call Macaulay a 'Torch bearer' in the path of progress gives an exaggerated account of the role that he actually played."

– Nurullah and Naik

यह मानना भी युक्तिसंगत न होगा कि मैकाले पहला व्यक्ति था जिसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा के संबंध में कदम उठाया। अनेक मिशनरी तथा राजाराम मोहन राय ऐसे भारतीय भी इस ओर कार्य कर चुके थे। उसने प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के विवाद को सुलझाने में अंग्रेजी का पक्ष ग्रहण किया और अंग्रेजी कूटनीति के कारण उसे सफलता भी मिली अतः हम उसे भारतीय शिक्षा का पथ–पदर्शक किसी मूल पर नहीं कह सकते। यह अवश्य मान सकते हैं कि मैकाले भारत में शिक्षा की आधुनिक रूपरेखा का शिलान्यास करने वाला था।[7]

मैकाले पर दूसरा आरोप यह लगाया जाता है कि उसने भारतीय भाषाओं की अवहेलना की है साथ ही उन्हें गँवार कहकर भी अपमानित भी किया। उन्हें अविकसित अपर्याप्त मानकर उन्हें शिक्षा के माध्यम के लिए अनुपयुक्त कहा है जब कि बम्बई के गवर्नर एलफिल्सटन तथा मद्रास के गवर्नर मुनरो इन भाषाओं के पक्ष में थे।

प्रिंसेस ऐसा विद्वान तत्कालीन बंगला राज्य का शिक्षा सचिव भी इस बात को मानता था कि अरबी फारसी

और संस्कृत के माध्यम से ही भारतीयों को विक्षित करना अधिक उपयुक्त होगा। विल्सन मैकाले की आलोचना करते हुए कहा कि संस्कृत अरबी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम न मानकर भारतीयों को पंगु बना दिया गया है।

मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम इसलिए बनाया जिससे भारतीय अंग्रेजों के राजभक्त बन जांए, क्योंकि वह ऐसा वर्ग उत्पन्न करना चाहता था जो देखने में भारतीय हो परंतु उसकी आत्मा पाश्चात्य गुलामी से बोझिल होः—

"….A class of persons, Indian in blood and colour but English, in opinion, morals and in intellect."

मैकाले ने अपनी अज्ञानता के कारण प्राच्य संस्कृत धर्म ज्ञान विज्ञान को हेय दृष्टि से देखा। विवरण—पत्र में इस संबंध में न जाने कितनी अनर्गल बातें कही गई है। उसने अरबी और संस्कृत साहित्य की तुलना यूरोप के पुस्तकालय की एक आलमारी से की है। यह उसकी अनुभवहीनता भी सम्भवतः गीता, वेद, उपनिषद जिनकी विदेशियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है उसे देखने को नहीं मिले। जिस समय मैकाले के पूर्वज फल खाकर जंगल में रहते थे और जमीन पर सोया करते थे उस समय भारतीयों ने संसार के राष्ट्रों में सभ्यता का संदेश दिया था। मैकाले की यह दंभपूर्ण बातें अशोभनीय थीं।

मैकाले ने भारतीय ज्योतिष दर्शन, चिकित्साशास्त्र का उपहास किया है। उसने लिखा है, भारतीय चिकित्सा शास्त्र को देखकर अंग्रेजी पशु चिकित्सकों को लज्जा आयेगी। भारतीय ज्योतिष शास्त्र को देखकर अंग्रेज बालिकाएँ हँस पडेंगी। सम्भवतः मैकाले चरक ऐसे महान् चिकित्सा शास्त्रियों के ग्रंथ देखता तो असत्य और निराधार बातें कहने का साहस न करता। वह भारतवासियों पर पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता लादना चाहता था इसलिए उसने भारतीय संस्कृति और धर्म की आलोचना की है। उसे सम्भवतः इस बात का ज्ञान न था कि भारतीय सर्वस्व खोकर अपने भारतीय धर्म की रक्षा करने में कृतज्ञ है।[8]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मैकाले ने कुछ विशेष विद्वानों के अनुसार कार्य किए। वह एक प्रकार से भारतीयों के हितों मे ही रहे। यही कारण है कि आज भारत में रूढ़िवादी शिक्षा की बजाय प्रगतिशील शिक्षा की नींव पड़ी जिसके कारण आज भारत में भौतिक, सामाजिक तरक्की ही नहीं हुई अपितु राष्ट्रीय चेतना भी जागृत हुई है। आज अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हम देश—विदेश में विचार विनियम कर पाते हैं। स्पष्ट है कि मैकाले की शिक्षा से भारतीयों में हानि कम और लाभ अधिक हुए हैं। मैकाले भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत रूपी रीढ़ की हड्डी को तोड़कर शासन करने में विश्वास करता था। ऐसे औपनिवेशिक साम्राज्यवाद का गुलाम बनाने में पूर्णतः थॉमस की शिक्षा नीति का विशेष हाथ रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, जी.एन., (1998) *'राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास',* राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. ग्रांट, चार्ल्स, (1792) 'ऑब्जर्वेशन ऑन दी स्टेट ऑफ सोसाइटी अमंग दि एशियाटिक सब्जेक्ट्स ऑफ द ग्रेट ब्रिटेन', लंदन।
3. सिंह, ए.के., (2012) *'शैक्षिक प्रबंध एवं विद्यालय संगठन'* साहित्यागार, जयपुर, पृ. 205।
4. चोपड़ा, पुरी, दास, (2002) *'भारत का व्यापक इतिहास'* स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा.लि., पृ. 67।
5. सुन्दरलाल, (2018) *'भारत में अंग्रेजी राज'* प्रभात प्रकाशन, पृ. 175।
6. सिंह, ए.के., पूर्वोक्त, पृ. 205।
7. नाइक, जे.पी., सैयद नुरूल्लाह, (1974) *''भारत में छात्रों का शिक्षा का इतिहास (1800—1973)''* भारत की मैकमिलन कंपनी।
8. सिंह, ए.के., पूर्वाक्त, पृ. 208।

****